OUKA
The University of Osaka
Institutional Knowledge Archive

Title	वर्तमान हिंदी कहानी में जाति और लिंग आधारित शोषण के रूप
Author(s)	Singh, Ved Prakash
Citation	外国語教育のフロンティア. 2019, 2, p. 325-334
Version Type	VoR
URL	https://doi.org/10.18910/71902
rights	
Note	

The University of Osaka Institutional Knowledge Archive : OUKA

https://ir.library.osaka-u.ac.jp/

The University of Osaka

वर्तमान हिंदी कहानी में जाति और लिंग आधारित शोषण के रूप

CASTE AND GENDER BASED EXPLOITATION IN CONTEMPORARY HINDI SHORT STORIES

SINGH, Ved Prakash

Abstract

In this research article, I have tried to show a reality of Indian society through an analysis of some contemporary Hindi short stories. Caste and gender based exploitation is an inhuman reality of Indian society down ages.

In their short stories a lot of Hindi writers expressed their views on Caste and gender based exploitation. They draw attention of Hindi readers to that fact that this kind of inhuman exploitation is still going on in various parts of India. They are trying to make Indian readers aware of this reality through their works.

Keywords: CASTE, GENDER, CONTEMPORARY, HINDI SHORT STORIES.

साहित्य के मूल में करुणा का भाव सदैव से रहा है। जो कष्ट में है उसके कष्ट को अपना कष्ट मानते हुए उसे सबका साझा कष्ट बनाना या उसका तादात्म्य कराना और उसके दूर करने की इच्छा भी साहित्य सर्जना में रही है। भारतीय समाज अनेक विषमताओं और उनसे पैदा अभाव और शोषण से ग्रस्त रहा है। यह अभाव और शोषण कम होने के स्थान पर बढ़ा है। लेकिन पूर्ववर्ती शोषित और वर्तमान शोषित में चेतना और विरोध के स्तर पर व्यापक परिवर्तन भी आया है। अब शोषित चुपचाप शोषण को सहने रहने की मनस्थिति को त्याग रहा है।

शोषण का प्रसार हमारे समाज में बहुत है। इस प्रसार के कारण जो शोषित नहीं है वह भी इस शोषण को दर्ज कर रहा है। शोषण के रूप और तरीके भी हमारे समाज में अगणित हैं। अनेक नए रूप और तरीके वर्तमान भूमंडलीकृत समाज ने भी पैदा किए हैं।

जाति और लिंग आधारित शोषण समाज में जितना पुराना है, उतना साहित्य में नहीं। लेकिन साहित्य में भी आदिकाव्य के साथ ही अभाव और परपीड़ा को दर्ज किया जा रहा है। चेतना और समाज की जागरूकता के साथ इस चेतना में वृद्धि हुई है। लेखन के स्तर पर शोषण का चित्रण और विरोध विपुल मात्रा में होने लगा है। इसलिए अब इसकी अपनी स्वतंत्र धाराएँ भी दिखने लगी हैं। पिछले दो तीन दशकों से इन्हें विमर्श के साथ जोड़कर पुकारा जाने लगा है। जैसे स्त्री सम्बन्धी शोषण और विरोध को दर्ज करने वाला साहित्य अब स्त्री विमर्श के नाम से पहचाना जाता है। लेकिन इस तरह का लेखन करने वाले सभी रचनाकार अपने लिए इस पहचान को अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं। इसी तरह जाति आधारित शोषण और उसका प्रतिकार करने वाले साहित्य को दलित विमर्श की संज्ञा दी जाने लगी है।

वर्तमान हिंदी कहानी में भी जाति और लिंग आधारित शोषण के अनेक रूपों का चित्रण और विरोध देखने को मिलता है।

समाज के आपसी सम्बन्ध जितने जटिल होते जा रहे हैं उतने ही जटिल शोषण–रूप भी देखने को साहित्य में मिलने लगे हैं। स्त्री–पुरुष दोनों ही तरह के रचनाकारों ने लिंग आधारित शोषण को अपनी संवेदनाएं दी हैं। दलित और गैर–दलित रचनाकारों ने भी जाति आधारित शोषण को सामने लाने और उस शोषण के प्रति समाज में विरोध भाव जगाने का काम किया है।
इस शोध पत्र में वर्तमान कहानी के नए और कुछ पुराने रचनाकारों की कहानियों को सामने रखकर जाति और लिंग आधारित शोषण पर चर्चा की जाएगी।

समाज में जाति को लेकर जो अमानवीय ढाँचा सदियों से बना हुआ था, वह मंडल कमीशन के बाद दरकने लगा। मंडल कमीशन सदियों से बने अमानवीय ढांचे पर एक बड़ी चोट थी। इस सकारात्मक कदम के चलते दलित वर्ग की उन्नति हुई। जाति पर आधारित इस शोषण पर आरंभ से ही कहानियाँ लिखी गईं। प्रेमचंद की 'सद्गति'किसे याद नहीं है। साहित्य की लोकतांत्रिकता राजनीति की लोकतांत्रिकता से व्यापक मानी जाती है। इसलिए इस दौर में इतिहास–विरोधी सवर्ण मानसिकता वाले समाज के हिस्से जो यह 'यातना'आई उसे भी वर्तमान कहानी ने दर्ज किया। नब्बे के दशक में इस आरक्षण विरोधी मानसिकता और उसमें सवर्ण ब्राह्मण की इतिहास विरोधी यातना को हृदयेश ने 'मनु' कहानी में दर्ज किया। इस समयावधि में दलित विमर्श ने आंदोलन का रूप लिया। अपने भीतर के जातिवाद को भी दलित कहानीकारों ने प्रकट किया। जाति आधारित कहानियों का स्वरूप इन वर्षों में एक सा नहीं रहा। इस विकास क्रम को कुछेक कहानियों की मदद से यहाँ देखने की कोशिश की जा रही है।
दलित चेतना का विमर्श और फिर आंदोलन का रूप लेना दलित समाज के सामाजिक आर्थिक उत्थान की परवर्ती घटना है। यह उत्थान शिक्षा और रोजगार से जुड़ा हुआ है। दलित चेतना ने सदियों से चले आ रहे अपमान और शोषण का प्रतिकार किया है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानी 'बकरी के दो बच्चे' में शोषण का बदला क्रूर दानसिंह को जेल भेज कर शर्मचंद लेता है। दानसिंह अपने अहंकार में दलित समाज के लोगों और भेड़–बकरियों को जीव ही नहीं मानता है। कहानी में दानसिंह का कथन है–
"रामदुलारे को शर्मचंद की सब बातें दैनन्दिन–सी लगीं लेकिन दानसिंह की यह उक्ति कि देड़ और भेड़ को हम जीव नहीं मानते उसे गहरे तक काट गयी।"[1)]
एस. आर. हरनोट की कहानी 'जीनकाठी' में गाँव की प्रथा अनुसार दलित को देवता बनाकर पूजने का रिवाज है। लेकिन यह रिवाज भी सवर्णों ने गाँव पर विपत्ति न आए इस कारण से चला रखा है। कहानी का एक अंश है–
"इस बार वह जोर से हँस दिया कैसा देवता कौन सा देवता मैं तो एक अछूत हूँ। कठपुतली मात्र हूँ। सारे पुण्य तो तुम सभी के लिए हैं। अपने स्वार्थ के लिए ऊँचे लोगों ने भी क्या–क्या परपंच रचे हैं।"[2)]
इस प्रथा के बाद सहज राम ने शर्मा जी से अपने और अपने परिवार के रहने के लिए जमीन माँगी। जो अंततः शर्माजी को देनी पड़ी। लेकिन स्थिति का दूसरा पक्ष भी काफी जगह देखने को मिल जाता है। मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'अपना गाँव' में कबूतरी को उसके पति के कर्ज न चुकाने के चलते गांव में नंगा कर घुमाया गया। ठाकुरों ने यह किया और सब देखते रहे। अब सब दलित परिवार गाँव छोड़ दूसरा गांव बसाने की बात सोचते हैं। कबूतरी अपनी विपदा कहती है–
"आँसुओं के साथ उसका कातर स्वर उभर रहा था भइया मेरा तो गाँव में कोई भी नई है। मुझे ठाकुरों ने नंगा कर दिया और सब देखते रै गए।"[3)]
गाँव का सबसे वृद्ध व्यक्ति हरिया इस घटना के बाद अपने सब के लिए नया गाँव बसा लेने की सलाह देता है। यह गाँव

जाति मुक्त गाँव होगा। कहानी जाति मुक्त समाज के निर्माण की ओर संकेत करती है।

दलित समाज में आ रहे परिवर्तनों पर दलित रचनाकार आलोचनात्मक ढंग से लिख रहे हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'शवयात्रा' में दलितों द्वारा अपने भीतर दलित समाज की उपस्थिति और शोषण को सामने लाते हैं। सूरजपाल चौहान की कहानी 'नया ब्राह्मण' दलित समाज के आर्थिक उन्नयन के बाद अपने समाज से कट जाने और व्यक्तित्वांतरण की कहानी है। कहानी में मंगलू राम खुद को दलित समाज से काट लेता है। साथ ही दलित चेतना और बाबा साहेब अंबेडकर का भी मजाक उड़ाता है। कहानी का एक अंश है–

"उसने अपना नाम भी मंगलू राम वाल्मीकि से एम.आर.बाली रख लिया। अचम्भे की बात थी कि वह बात–बात में अपने समाज के लोगों का उपहास करता।"[4]

इस तरह सूरजपाल चौहान उसे नया ब्राह्मण कहते हैं। यह जाति आधारित शोषण का नया रूप है। जिसमें जो पहले भोक्ता था अब वह शोषणकर्ता हो रहा है। कहानी में मंगलू राम गाँव से आए अपने ताऊ के साथ खराब व्यवहार करता है। संपन्न हो जाने के बाद वह अब खुद को शोषक की भूमिका में ले आया है।

वर्तमान समाज में जाति के शोषण के आधार पर कुछ बड़े परिवर्तन जरूर हो रहे हैं लेकिन एक ओर इनका बढ़ना भी जारी है। परिवर्तन और उसका विरोध एक साथ दर्ज किया जा रहा है। जातिवादी मानसिकता के वर्तमान में व्याप्ति के संबंध में सुभाषचंद्र कुशवाहा ने लिखा है–

"इक्कीसवीं सदी की दहलीज पर खड़ा भारत का पढ़ा लिखा तबका जातिवादी मानसिकता से उबर नहीं पाया है। पंजाब, हरियाणा जैसे समृद्ध राज्यों में दलित महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार हो रहे हैं और पानी माँगने पर पेशाब पिलाया जा रहा है। स्कूलों में 'मिड डे मील' योजना के तहत दलितों द्वारा पकाया खाना गैर दलित नहीं खा रहे हैं।"[5]

दलित चेतना आने से सवर्ण समाज का व्यवहार एकाएक नहीं बदल गया। लेकिन इस चेतना ने सवर्ण समाज के एक हिस्से को दलित समाज का सहचर बना दिया। ऐसी स्थिति में दलितों को मिलने वाली यातना को सवर्ण समाज ने भी जाने–अनजाने झेला। शिक्षा और नौकरी मिलने से दलित समाज ने खुलकर सवर्ण समाज के द्वारा लादी गई अमानवीय रीतियों को मानने से इनकार कर दिया। सलाम एक ऐसी ही प्रथा है। जिसमें नवविवाहित वर–वधू को सवर्णों के दरवाजे पर जाना पड़ता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'सलाम'कहानी में सवर्ण समाज के इस अत्याचार और दलित समाज में परिवर्तन की लहर दोनों को दिखाया गया है। कमल अपने दोस्त हरीश की शादी में उसके गाँव आया हुआ है। सुबह चाय की तलब में वह बाहर घूमने निकलता है। चाय की गुमटी में घुसता है। चाय बनने की तैयारी चल रही है। कमल चाय पिलाने के लिए चाय वाले से कहता है। वह भट्टी सुलगाने लगता है। लेकिन जब बातचीत में चाय वाले को मालूम पड़ता है कि वह देहरादून से कल रात चूहड़ों की बारात में आया है। तो उसे चाय नहीं देता। बाद में कमल अपमानित होकर बच–बचाकर वहाँ से आ जाता है। कमल जब अपनी जाति (ब्राह्मण) बताता है तो लोग उसे और अपमानित करते हैं। कमल अंततः इस यातना को सहकर लौट आता है।

दलित चेतना से आहत सवर्ण और हिंसक–क्रूर होकर भी सामने आ रहे हैं। कहानी का यह अंश परिवर्तन की लहर के साथ उस कट्टरता को भी दिखाती है। हरीश पढ़ा–लिखा है। वह इस कुप्रथा को बंद करना चाहता है। उसकी यह बात गाँव में हलचल मचा देती है। सवर्ण (रांघड़) इसे अपना अपमान समझते हैं।

इस कहानी के संबंध में भालचन्द्र जोशी ने लिखा है–

"सलाम कहानी का हरीश विवाह के बाद सवर्णों के घर जाकर सलामी देने और बख्शीश पाने की पुरानी प्रथा का विरोध

करता है। हरीश पढ़ा–लिखा युवक है। लेकिन यह विरोध महज एक शिक्षित युवा का निजी विरोध भर नहीं है। यह एक समूची पीढ़ी का कुप्रथा के खिलाफ आक्रोश है।"[6)]

दलित विमर्श इसी जाति आधारित गतकालिक सामाजिक व्यवहारों, रीतियों आचरणों के खिलाफ समूची पीढ़ी का आक्रोश ही है। भारतीय समाज की जाति–संरचना में विभिन्न स्तरों पर शोषण के नाना रूप हैं। जाति के भीतर और बाहर भी इस प्रकार के शोषण छिपे हुए हैं। इसे भी दलित रचनाकारों ने उभारा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी शवयात्रा इस दलित–लेखन का अगला पड़ाव है। जातिवाद सिर्फ तथाकथित उच्च वर्ण के लोगों द्वारा दलित समाज के शोषण अपमान तक ही सीमित नहीं है। बल्कि वह दलित समाज द्वारा अपने ही भाई–बंदों को अपने से निम्न समझने की स्थिति में भी है। 'शवयात्रा'कहानी तथाकथित अछूतों में अछूतों की कहानी है। चमारों के गाँव में बल्हारों की यह कहानी है। बल्हारों का एक परिवार जोहड़ के पार रहता है। सुरजा का बेटा कल्लन रेलवे में नौकरी करता है। शहर से कभी कभार ही गाँव आता है। सुरजा के साथ उसकी विधवा बेटी सन्तो रहती है। घर जर्जर है। कल्लन सुरजा संतो को शहर ले जाना चाहता है। लेकिन सुरजा इसी माटी में मरना चाहता है। बेटे से जर्जर घर पक्का बनवाने के लिए कहता है। बेटा कल्लन पत्नी और बेटी सलोनी के साथ नया घर बनवाने के लिए गाँव आता है। गाँव के प्रधान आदि लोग कल्लन के नए घर बनने को अपना अपमान समझते हैं। गाँव के लोग कल्लन की बेहतर आर्थिक स्थिति से निर्मित अच्छी सामाजिक स्थिति को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं।

अभी भी जातिगत विद्वेष खत्म नहीं हुआ है। दलित और आरक्षण विरोधी मानसिकता अभी भी बनी हुई है। अनिता भारती की कहानी 'एक थी कोटे वाली'इसी आरक्षण विरोधी मानसिकता को सामने लाती कहानी है। यह कहानी जातिगत विद्वेष, गुण वत्ता के नाम पर आरक्षण विरोध की बात एक साथ सामने रखती है।

जातिवाद कैसे समाज के भीतर घुस चुका है इसे इस तरह की कहानियाँ दिखाती है। रजत रानी 'मीनू'की कहानी 'हम कौन हैं' जाति अथवा सरनेम के विमर्श को सुशिक्षित माने जाने वाले समाज में पब्लिक स्कूलों में दिखाता है। कहानी का एक अंश है–

"मम्मी फिर मेरा सरनेम क्या है, आपने सरनेम क्यों नहीं लगाया, बताओ न, वालिंयटर दीदी कह रही थीं, जो सरनेम नहीं लगाते, वह नीची जाति के होते हैं, जाति क्या होती है, मम्मी हमारा सरनेम क्या है, हम कौन हैं मम्मी।"[7)]

इन घुलीमिली वास्तविकताओं को दलित समाज की कहानियों में सामने लाया जा रहा है। वास्तविकता एकरूपी नहीं है। कोई भी एक कथन इस तरह की कहानियों को संपूर्णता में नहीं बता सकता। अतः उपर्युक्त कहानियों के माध्यम से इस समाज के एक हिस्से को समझने की कोशिश की गई।

वर्तमान दौर में स्त्री रचनाकारों द्वारा अथवा स्त्री–पुरुष संबंधों में शोषण के नए रूपों पर विभिन्न रचनाकारों ने खूब लिखा है। सामंती पूंजीवादी जड़ताओं में स्त्री की वही स्थिति है जो जातिग्रस्त समाज में दलित की है। वर्तमान समाज इस संबंध व्यवस्था में निहित ऊँच–नीच शोषण अपमान को खत्म करना चाहता है। लेकिन यह इतना आसान नहीं है। इस दौर में रचनारत कहानीकारों ने समाज और संबंध व्यवस्था में छिपी अमानवीयता अपमान शोषण को रचना का विषय बनाया है। इसमें पहले से ही सामंती स्थितियों के साथ नयी बाजारवादी स्थितियाँ आ मिली हैं। इन स्थितियों से स्त्री को वस्तु के रूप में रिड्यूज कर दिया है। वर्तमान स्त्री–विमर्श इन दोनों स्थितियों पर चोट कर रहा है। वह संबंध के समान समतामूलक सम्मानजनक रूप की तलाश कर रहा है। आर्थिक स्वातंत्र्य और निर्णय के अधिकार को स्त्री–चेतना और आंदोलन से जुड़े रचनाकारों ने पहचाना है और इसे कहानी में दिखाना बताया है। अरुण प्रकाश की दो कहानियों 'अच्छी लड़की' और 'बहुत अच्छी लड़की' के माध्यम से वर्तमान स्त्री चेतना की शिनाख्त कर सकते हैं। बदलते हुए समाज में बदलती हुई स्त्री की दो

छवियाँ। पहली कहानी में घर, परिवार, माँ, भाई के लिए निरंतर कुर्बान होती नीलम और दूसरी कहानी में पति की मृत्यु के बाद अपनी बेटी को मिसेज कापड़िया को गोद देकर नया जीवन शुरू करने वाली अनिता राव, दोनों कहानियों को आमन–सामने रखकर दो तरह के जीवन–दर्शन बताए गए हैं। पहले में नीलम आर्थिक स्वतंत्र है पर अपनी इच्छाएँ, सपने उसके अपने नहीं हैं। अपनी जिंदगी के सबसे बड़े, जरूरी निर्णय वह संभवतः खुद नहीं कर सकती। वह गाड़ी और घर भले ही खरीद ले लेकिन तीस से पैंतीस, फिर छत्तीस, सैंतीस, अड़तीस साल की होकर भी अपने लिए शादी का समय, प्यार का समय नहीं निकाल पाती प्यार से उसे अपनी छवि खराब होने का डर है, इसलिए वह भी नहीं हो पाता। आत्म–निर्भर है लेकिन आत्म चेतस नहीं है, वह भावुक, डरी हुई लड़की है।

नीलम अंततः अपनी जिन्दगी का अहम् फैसला खुद नहीं ले पाती। घर वाले उसकी आर्थिक सम्पन्नता को अपने लिए भुनाते रहते हैं, वह निरंतर इसमें खुद को होम करती रहती है। यह एक अच्छी लड़की की कहानी है। जो आर्थिक पराधीनता से तो बाहर है। लेकिन मानसिक पराधीनता से नहीं। दूसरी कहानी 'बहुत अच्छी लड़की' में ये दोनों कमियाँ नहीं हैं। वह आर्थिक मानसिक स्वतंत्रता से लैस है। अनिता राव आत्म चेतस व्यावहारिक, कुशल और भावुकता से रहित है। वह पति की मृत्यु के बाद अपनी जिजीविषा को समेटती है। फिर से जीवन को व्यवस्थित बनाए रखती है। जवान विधवा और एक बेटी की माँ का तमगा वह नहीं लगाए रखना चाहती। उसकी अपनी भी इच्छाएँ हैं, वह ह्रदयहीन नहीं लेकिन व्यावहारिक है।

यह आत्म निर्भर और आत्म चेतस स्त्री का कथन है। जो दुखों के दागों को तमगे की तरह नहीं पहनना चाहती, बल्कि जिन्दगी को दोबारा बेहतर स्थिति में लाने की पक्षधर है। भावुकता रहित व्यावहारिक स्त्री की आवाज अनिता राव है। महादेवी वर्मा ने स्त्री के 'अर्थ–स्वातंत्र्य का प्रश्न'शीर्षक से एक निबंध लिखा है। यह लेख 'शृंखला की कड़ियाँ' पुस्तक में संकलित है। लगभग 1935 में लिखा गया यह निबंध स्त्री की आर्थिक स्वाधीनता को उसके जीवन की विषमता को कम करने वाला महत्त्वपूर्ण साधन बताता है। महादेवी वर्मा लिखती हैं–

"शताब्दियाँ की शताब्दियाँ आती जाती रहीं परंतु स्त्री की स्थिति की एकरसता में कोई परिवर्तन न हो सका। किसी भी स्मृतिकार ने उसके जीवन की विषमता पर ध्यान देने का अवकाश नहीं पाया। किसी भी शास्त्रकार ने पुरुष से भिन्न करके उसकी समस्या को नहीं देखा। अर्थ सामाजिक प्राणी के जीवन में कितना महत्त्व रखता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।"[8]

स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोण कमोबेश अब भी मध्यकालीन विचारों से भरा पड़ा है। बाजार ने आकर उसमें इजाफा ही किया है। स्त्री शरीर को भोगने और घूरने की सामग्री बना दिया गया है। किस तरह आम जिंदगी में एक स्त्री और लड़की पुरुष की नजरों और मानसिकता का सामना करती है इसे आज की कहानियों में खूब दिखाया गया है।

पुरुष समाज लगातार स्त्री के प्रति अमानवीय भी होता जा रहा है। वह पुरानी सामंती सोच को बड़े फर्क के साथ ढो रहा है। सोनाली सिंह की कहानी 'क्यूटीपाई' में पुरुष समाज के भीतर बैठे पूर्वाग्रह को उजागर किया गया है। जो तुरंत स्त्री को दुष्चरित्र ठहराकर अपने अहंकार की तुष्टि कर लेना चाहता है।

"कभी कभार न्यूज पेपर और मैग्जीन वगैरह में उसके फोटोग्राफ से जरूर मुलाकात हो जाया करती थी। उसने माडलिग में रुचि दिखानी शुरू कर दी थी। शगुन को लेकर उन सिरफिरे महाशय से मेरी अब भी तकरार चला करती थी। 'आई थिंग फिल्मों में' काम करने के चक्कर में है। चलो सी ग्रेड फिल्मों की हीरोइन तो बन ही सकती है। 'जी नहीं, वह अपनी पढ़ाई का खर्चा निकाल रही है। पढ़ाई का खर्चा तो वैसे ही निकल आता होगा 'जिस लड़की की जिंदगी में इतना इमोशनल डिसबैलेंस रहा हो, अगर वह अधिकाधिक पैसा कमाकर अपना फ्यूचर सिक्योर करना चाहती है तो इसमें बुराई क्या है।"[9]

स्त्री चेतना के बढ़ने के साथ–साथ स्त्री विरोधी मानसिकता भी बढ़ती जा रही है। पढ़े लिखे समाज में भी। स्त्री के स्वाधीन होने और अपनी इच्छा से जीने को बाजार अपने हिसाब से मोड़ रहा है वहीं पुरुष समाज उसकी हर गतिविधि को चरित्रहीनता

के रूप में व्याख्यायित करता है।

विवाह व्यवस्था का वर्तमान स्वरूप शोषणपरक है। यह पहले भी बहुत मानवीय नहीं रहा है। समाज में स्त्री के प्रति जैसा रुख होगा वैसा ही विवाह संस्था का ढाँचा होगा। उसके शोषणपरक होते जाने का भी यही कारण है। इस समय लिखी जा रही कहानियों में विवाह संस्था पर प्रश्नचिह्न लगाने वाले स्त्री पात्र भी इसीलिए काफी मिलते हैं।

संजीव की कहानी 'मानपत्र' में विवाह संस्था पर प्रश्नचिह्न लगाया गया है। इसी तरह की एक कहानी क्षमा शर्मा की 'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' है। इस कहानी में स्त्री देह पर सिर्फ उसके अधिकार और लाभ अर्जित करने की बात कही गई है। कहानी की एक पात्र केशा अपनी महिला मित्र से बताती है कि वह विवाह संस्था में पति द्वारा देह के भोगने को अपने लिए सुरक्षित करके 'लाभ'अर्जित कर रही है। लेकिन यह चुनाव क्या सीधे सीधे बाजार की शरण में जाना नहीं है, यह विकल्प बाजार पोषित विचार अधिक लगता है।

स्त्री अधिकारों के लिए आर्थिक स्वतंत्रता पहली सीढ़ी है, दूसरी है मानसिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने का अधिकार। वर्तमान समाज में इन दोनों स्थितियों के अभाव और उसके लिए संघर्ष दोनों विद्यमान हैं। स्त्री विषयक और स्त्री रचनाकारों द्वारा लिखी गई कहानियाँ कमोबेश इन्हीं स्त्री आकांक्षाओं को बयान करती हैं। स्त्री को सामाजिक विषमता और शारीरिक भिन्नता के चलते जितने कष्ट यातना सहनी पड़ती है, उसे स्त्री पुरुष रचनाकारों ने खूब दिखाया है। इसी तरह स्वयं प्रकाश की कहानी 'बलि' में एक ग्रामीण आदिवासी लड़की के बाजार और सामंती समाज द्वारा दोहरे शोषण को दिखाया बताया गया है। बाजार आजादी की मृगमरीचिका दिखाता जरूर है। लेकिन उपलब्ध नहीं करवाता। इच्छाओं और अनुभवों के विस्तार के बाद बाजार उसे निर्वासित कर देता है। शादी के बाद वह उसी सामंती पृष्ठभूमि में आ जाती है। पति अपनी इस शहराती–सी पत्नी पर अमानवीय अकथनीय अत्याचार अपने अहम् की तुष्टि के लिए करता है। अंततः वह अपना जीवन समाप्त कर लेती है। खुद को खत्म करने से पहले वह पति से रोज पिटती रही सोचती रही कि शायद अब यह यातना बंद हो।

चित्रा मुद्गल ने 'लकड़बग्घा'कहानी में पुरुष समाज के शोषण और स्त्री पराधीनता को दिखाया है। इस कहानी में पछांहवाली अपनी बहन के बच्चों की तरह अपनी बेटी पुनिया को भी खूब पढ़ा–लिखाकर डाक्टर बनाना चाहती है। लेकिन सवर्ण–सामंतवादी पुरुष समाज और इसके पैरोकार लम्बरदार (उसके जेठ) उसे गोली मारने पर उतारू हो जाते हैं। अगले दिन पछांहवाली को सुबह जंगल से लकड़बग्घा उठा ले जाता है। कहानी में पछांहवाली लम्बरदार से लड़ती है, अपनी बेटी को किसी भी तरह शिक्षित देखना चाहती है, अपनी स्थिति से अच्छी स्थिति में देखना चाहती है। लेकिन जेठ लम्बरदार इसे अपना अपमान समझता है। यह तरीका स्त्री की आर्थिक सबलता को रोकता है। आर्थिक पराधीनता को बनाये रखने के लिए यह जरूरी है कि शिक्षा से भी वंचित रखो।

पुरुष मानसिकता और राजनीति मिलकर कैसे स्त्री का शोषण कर रहे हैं इसे मैत्रेयी अपनी कहानी फैसला में दिखाने की कोशिश करती हैं। राजनीति में स्त्रियों के आरक्षण को अपने लाभ के लिए पुरुषों ने उन्हें राजनीति में अपना मोहरा बनाकर उतारना शुरू कर दिया है। बदली हुई परिस्थितियों को अपने हिसाब से मोड़ने के रूप में इसे देखा जा सकता है। स्त्री पर होने वाले शोषण दूर होने के बदले इसीलिए बदस्तूर जारी हैं। फैसला कहानी में वसुमति जब चुनाव में खड़ी होती है तो गाँव की स्त्रियाँ यही सोचती हैं कि अब उनके ऊपर होने वाले शोषण खत्म हो जाएँगे। लेकिन ऐसा नहीं होता है। कारण है कि वसुमति की जगह सारे निर्णय उसका पति लेता है। और हस्ताक्षर उसके चलते हैं। अगर वसुमति को अधिकार मिल जाते तो गाँव की स्त्रियों के जीवन में से शोषण कुछ कम हो जाता।

लेकिन जब ऐसा नहीं हो पाता तो वसुमति अपने पति को वोट न देकर आगे चुनाव में हरवा देती है। यह उसका प्रतिशोध

है। जो वह पति से लेती है। यह उसके मुक्ति का रास्ता भी है। दलित स्त्री जहाँ स्त्री होने का शोषण सहती है वहीं दूसरी ओर वह दलित होने का दंश भी झेलती है। कई बार यह यातना देने वाले उसके अपने संबंधी होते हैं। सूरजपाल चौहान की कहानी 'बदबू' में संतोष के साथ उसकी सास और पति ही इस शोषण के स्रोत बन जाते हैं। उसे मजबूर होकर मल–मूत्र ढोना पड़ता है। कहानी का एक अंश है–

"उसे अब भी ऐसा लग रहा था, जैसे उसका पूरा शरीर मल–मूत्र में लथपथ हो। हाथों की उंगलियाँ, जो गंद से सन गयी थीं, उन्हें वह काटकर अलग कर देना चाहती थी।"[10)]

स्त्री जीवन मानव जाति की आधी आबादी का जीवन है। इस जीवन को विषम सामाजिक व्यवस्था ने नाना रूपों में शोषित बनाया हुआ है। बेटी के जन्म लेने से पहले ही उसके साथ अत्याचार होना शुरू हो जाना है। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली से पूर्व जन्म के बाद बेटियों का मार डाला जाता था, लेकिन अब जाँच के बाद ही, भ्रूण हत्या करवा दी जाती है। यह शोषण जीवन के हर हिस्से में किसी न किसी में जारी रहता है। पुरुषवादी मानसिकता और विषमताग्रस्त समाज, दहेज आदि स्थितियों के चलते ये अत्याचार बहुत दिनों से चल रहे हैं। लड़की के जन्म को मातम में बदल देने की स्थितियाँ समाज में अब भी मौजूद हैं। स्थितियों के बदलने के बाद ही मनःस्थिति बदली जा सकती है। फिर भी परिवर्तन आया है। जड़ मानसिकता और समाज में आ रहे सकारात्मक परिवर्तन की कहानी है सुषमा मुनीन्द्र की 'मेरी बिटिया'।

घर में यह दूसरी बेटी का जन्म हुआ है। प्रत्याशा बेटे की थी, जाँच भी करवायी थी। लेकिन जब बेटी हुई तो जश्न की जगह मातम ने ले ली। सभी देखने–सुनने वाले पिता दयाल के दुर्भाग्य को कोसने लगे। लेकिन स्थिति बदलती है। दयाल अपने पिता तथा डाक्टर की बातें सुन बेटी जन्म का जश्न मनाता है। इसे देख बाकी लोग स्तब्ध होने लगते हैं। लड़की को बोझ यह समाज ही बनाता है। दयाल इस भावबोध से बाहर निकलकर अस्पताल में मिठाई बाँटता है। नर्स भी संकुचित हो जाती है। उसे यह परिवार कुछ परेशान लग रहा था। लेकिन कई बार भावबोध बदलने से भी समाज की (बाहरी) स्थितियाँ बदलने लगती हैं। कहानी का एक अंश है

"सिस्टर ये लीजिये। घर में लक्ष्मी आई है।'नर्स सकुचा सी गई– नहीं...नहीं...आप पहले ही परेशान हैं। कैसा परेशान जन्म किसी का भी अफसोस करने के लिए नहीं होता। उत्सव मनाने के लिए होता है, स्वागत करने के लिए होता है।"[11)]

यह परिवर्तन कतई अविश्वसनीय नहीं है। लेकिन पूरे समाज को इस वांछित परिवर्तन की स्थिति में पहुँचने में अभी और समय लगेगा। प्रकृति ने स्त्री शरीर को पुरुष शरीर से भिन्न निर्मित किया है। यह भिन्नता उसका वैशिष्ट्य है। लेकिन पुरुषवादी समाज ने इसे उसकी कमजोरी बना दिया। इस कमजोरी का लाभ घर–बाहर का पुरुष समाज बराबर उठाता रहा है। घर में पिता, भाई, पति, पुत्र, अन्य सगे संबंधी, बाहर के परिचित–अपरिचित लोग स्त्री पर अत्याचार करने के लिए उसके शरीर को सबसे पहले निशाना बनाते हैं। कमल कुमार की कहानी 'पुल' में बेटी को उसके पिता अपनी हवस का शिकार बनाते हैं। यह यातना उसे शादी के बाद भी याद रहती है। यह शोषण और यातना की स्मृति का पुल है।

समय के बदलते रूपों ने शोषण के भी रूप बदल दिये हैं। पुराने के साथ नए रूप में शोषण स्त्री–समाज झेल रहा है, उसे भी कहानियों में व्यक्त किया जा रहा है। इसी के साथ–साथ जीवन के विभिन्न राग–रंगों को भी स्त्री रचनाकारों ने कहानियों में उभारा है। हिन्दू और मुस्लिम समाज में स्त्री की इच्छा के बिना उससे शादी का प्रचलन है। यह भी पितृसत्तात्मक समाज के वर्चस्व और शोषण का चिराचरित रूप है। 'गूँगा आसमान' में नासिरा शर्मा ने इसी तरह के निकाह की अमानवीयता की ओर इशारा किया है। लेकिन पुरुष ने अपने बल, प्रचार और समाज के पुरुषवादी स्वरूप का लाभ उठाकर औरत को ही गलत रूप में प्रस्तुत कर दिया। फरशीद बड़ा अधिकारी है। मेहरअंगीज समेत उसकी चार बीवियाँ हैं। मेहरअंगीज उस निकाह नामे को फाड़ कर उन तीन बीवियों को अपने पति की गिरफ्त से निकाल आजाद कर देती है। लेकिन पति उसे ही बदनाम

कर देता है।

राज व्यवस्था और परिवार व्यवस्था सरंक्षण के नाम पर भी अपने भीतर चलने वाली शोषण की प्रक्रियाओं को जारी रखती है। इस व्यवस्था में रहने वाला इसके विकल्प को नहीं खोज पाता। फलतः यह शोषण दुर्निवार होता जाता है। सीमा शफक की कहानी 'मोहे अगले जनम फिर औरत कीजो' में करीम शेख और उसकी पत्नी का संबंध पीटने वाले और पिटने वाले का संबंध है। उसकी पत्नी का अंतिम शरण्य यह घर है। जहाँ हर रात वह मार खाती है। तीन बच्चों की खातिर वह इसी व्यवस्था में रहने के लिए अभिशप्त है। एक दिन दाल मण्डी में दलाल का काम करने वाले करीम शेख का खून वहीं रहने वाली बासन्ती कर देती है। बासन्ती कचहरी में जो बयान देती है, वह करीम की पत्नी के मुँह पर तमाचा है जो मार खाकर भी इसी व्यवस्था में रहती है। वह कचहरी में करीम शेख को मार डालने का कारण बताते हुए बयान देती है–

"मेरे पेट में मेरा बच्चा साब मेरा खून...मैंने उसे समझाया तो हरामी गाली गलौज पे उतर आया। जबरदस्ती पे उतर आया...मैं रंडी ही सही पर क्या मेरी कोई इज्जत नहीं...मेरी ख्वाहिश के बिना कोई मुझे कैसे छू सकता है।"[12)]

बासन्ती के बयान में विषम अत्याचार पूर्ण परिवार संस्था पर भी चोट की गई है। बाजार शोषण के रूप से मुक्त करा कर शोषण के दूसरे रूप के हवाले कर देता है। यह बात मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी 'कालिन्दी' को पढ़कर जाना जा सकता है। देह व्यापार से अगर कालिन्दी 'मुक्त' भी होती है तो वह दूसरे रूप में चली जाती है। यह दूसरा क्षेत्र माडलिंग का है। कार्य क्षेत्र में स्त्रियों के प्रति जो शोषण की घटनाएँ इतनी तेजी से होने लगी हैं उसके पीछे भी पुरुष समाज की पुरानी ध ाारणा काम कर रही है। जिसमें वह कैसे भी स्त्रियों के सार्वजनिक क्षेत्र में आने को हतोत्साहित कर देना चाहता है। शोषण का एक नया रूप उच्च अधिकारी द्वारा अपने अधीन महिला कर्मचारी को पदोन्नति के आश्वासन में उसका दैहिक शोषण करना है। यह नये रूप में पुरुष सत्तात्मक समाज का नया चेहरा है। शोषण का नया रूप है जिसे पहचान कर खत्म करने की जरूरत है। श्यामल बिहारी महतो की कहानी 'बहेलियों के बीच' इसी पृष्ठभूमि पर लिखी गई है।

कार्य क्षेत्र में ही नहीं बल्कि समाज के किसी भी क्षेत्र में आज की स्त्री अगर अपने को सुरक्षित महसूस नहीं करती है तो इसके पीछे कारण वर्तमान समाज व्यवस्था में आने वाले शोषण और हिंसा है। धनवान पुरुष के लिए यह शोषण और आसान है। वह सत्ता पक्ष को अपने हक में करना बेहतर तरीके से जानता है। अरविंद जैन की कहानी 'शिकार' एक लड़की पर हुए बलात्कार के संदर्भ में पुरुष समाज के चरित्र को उभारते हैं।

वर्तमान बाजारवादी व्यवस्था ने स्त्री को स्वाधीनता का सपना दिखाया है। विज्ञापन ने स्त्री से ज्यादा स्त्री देह को स्वतंत्र किया है। बाजार और विज्ञापन स्त्री को पहले से मौजूद शोषण के तरीकों में इजाफा ही करते हैं। बाजार लाभ संचालित होता है और विज्ञापन प्रदर्शन प्रियता से निर्मित। स्त्री को इस शोषण में आजादी का भ्रम दिया जाता है। शोषण के इस रूप पर अलका सरावगी की कहानी 'दूसरे किले में औरत'है। पहले किले की पराधीनता अभी गयी नहीं इसी के साथ–साथ पराध ीनता शोषण का दूसरा किला भी सामने आ गया। जिसने खुद को आजादी का मसीहा बताया। लेकिन इसमें भी स्त्री को कैद ही मिली। बाजार और विज्ञापन स्त्री–देह का अश्लील रूप से शोषण कर रहा हैं। इस शोषण में सभी स्त्रियों की आर्थिक स्थिति समान नहीं है। अधिकांश की अच्छी स्थिति नहीं है। लेकिन चाहे अनचाहे अपनी देह के इस बाजार वादी दुरुपयोग के लिए स्त्रियाँ अभिशप्त हैं। पहले जो काम डरा–धमका कर होता था। अब उसे मोहक बनाकर लुभावना दिखाकर कराया जा रहा है। 'दूसरे किले में औरत'कहानी में वाचक ने 'ड्रीम हाऊस एसोसिएट्स' से एक घर खरीदा है। घर अभी बना नहीं है। और तो और काफी समय बीत जाने के बाद भी जिस जगह यह प्रस्तावित बहुमंजिला इमारत बननी है उसे खाली भी नहीं करवाया गया है। वाचक इंडिया टावर की दसवीं मंजिल पर इसके दफ्तर जाता है। वहाँ इस काम को देखने संभालने के लिए जिस सुंदर स्त्री को नियुक्त किया गया है, उसका सौन्दर्य सम्मोहनकारी है। वह स्त्री अपनी बातों, रूपाकार, पहनावे,

बोलचाल से वाचक का रोष हर कर उसे मंत्र बिद्ध कर लेती है। इन अंशों से वर्तमान समय–समाज में स्त्री के रूप का बाजार किस तरह उपयोग कर रहा है, इसे देखा–समझा जा सकता है।

यह सौन्दर्य बाजार का विस्तार करने वाला सौन्दर्य है। यह सौन्दर्य क्रीत सौन्दर्य है। लेकिन इस सौन्दर्य के पीछे का सच प्रायः भयावह, दारुण विलोम होता है। कैसे बाजार और उपभोक्तावाद आज के मनुष्य को अपनी गिरफ्त में ले चुका है इसे देखने के लिए ओमा शर्मा की कहानी 'ग्लोबलाइजेशन' को पढ़ा जा सकता है। उपभोक्तावाद के सामने स्त्री के व्यवहार के एक हिस्से को यह कहानी बयान करती है। कहानी नये सौंदर्य प्रसाधन के प्रति दुर्निवार आकर्षण को व्यक्त करती है।

बाजार स्त्री शरीर का आज हर संभव उपयोग करना चाहता है। वह अगर स्त्री को नौकरी देता है तो उपयोग उसकी देह का करता है। वह विज्ञापनी मानसिकता से स्त्री देह को अपनी वस्तु के प्रचार से लेकर उसे बेचने तक के लिए जरूरी मानता और बना देता है। पुरुषों के ही लिए उपयोग में आने वाली उपभोक्ता वस्तुओं के लिए भी बाजार स्त्री शरीर को सम्मोहनकारी भूमिका में लाकर प्रस्तुत करता है।

बाजार, मीडिया और मनोरंजन उद्योग ने मिलकर स्त्री की जो छवि निर्मित की है वह पुराने सामंती शोषण की परंपरा में है। यह शोषण ज्यादा मारक भी है। इसमें सम्मोहन के द्वारा यह शोषण को नयी जीवन शैली के रूप में प्रचारित प्रसारित करता है। इस संबंध में प्रभा खेतान ने लिखा है–

''स्त्री पर विज्ञापन, टीवी–फिल्म उद्योग तथा पत्रिकाओं द्वारा गहरा दबाव है कि यह यौन दृष्टि से आकर्षक और सक्रिय लगे। टीवी का प्रत्येक वाणिज्यिक विज्ञापन स्त्री को दैहिक मुक्ति के नए–नए संदेश देता है। आकर्षण के नए फार्मुले सिखाता है। फिल्मों की अर्द्धनग्न नायिकाओं के स्तनों का उभार, नंगीजांघें, खुली पीठ, नाभि के नीचे सरकती हुई साड़ी या जींस–पैंट। 'चोली के पीछे क्या है'गाती हुई माधुरी दीक्षित जैसी नायिकाओं की भीड़ स्त्री को काम वस्तु में परिणत कर चुकी है। नारीवाद स्त्री मुक्ति का चाहे जितना झंडा बुलंद करे, पर स्त्री का तन और मन दोनों मीडिया द्वारा प्रेषित व रचित छवि से अनुकूलित और संचालित हैं।"[13)]

स्त्री के शोषण की परंपरा में यह नये तरह का शोषण है। विज्ञापन से होने वाले शोषण को मोहक शब्दावली में ढँक कर ही सामने लाया जाता है। इसलिए इसकी पहचान भी पिछले शोषण की तरह आसान नहीं रह गई है।

बाजार और नयी आर्थिक नीतियों के कारण जातिगत और लिंगपरक शोषण नये रूपों में उपस्थित हुआ है। इसमें पहले से चला आ रहा शोषण भी शामिल हो गया है। जिसे वर्तमान कहानी दिखा रही है।

संदर्भ सूची

1) सांभरिया, रत्न कुमार, बकरी के दो बच्चे, नयी सदी की पहचान श्रेष्ठ दलित कहानियाँ, संपादक मुद्राराक्षस, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2004, पृ. 119
2) हरनोट, एस. आर., जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन, पंचकूला हरियाणा, प्रथम संस्करण 2008, पृ. 34
3) नैमिशराय, मोहनदास, अपना गाँव, दलित कहानी संचयन, संपादन रमणिका गुप्ता, साहित्य अकादेमी, प्रथम संस्करण 2003, पृ. 51
4) चौहान, सूरजपाल, नया ब्राह्मण, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2009, पृ. 62
5) कुशवाहा, सुभाषचंद्र, होशियारी खटक रही है, जाति दंश की कहानियां, संपादक, सुभाष चंद्र कुशवाहा, सामयिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2009, पृ. सं. 13
6) जोशी, भालचन्द्र, यथार्थ की यात्रा, शिल्पायन, संस्करण 2013 पृ. 64
7) मीनू', रजत रानी, हम कौन हैं, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012, पृ. 19
8) वर्मा, महादेवी, शृंखला की कड़ियाँ, लोकभारती प्रकाशन, दूसरा पैपर बैक संस्करण 2010, पृ. 89

9) सिंह, सोनाली, क्यूटीपाई, युद्धरत आम आदमी, हाशिए उलांघती औरतः कहानी–3, स्त्री मुक्ति आंदोलन पर केंद्रित कहानी विशेषांक हिंदी, संपादन रमणिका गुप्ता, अर्चना वर्मा, पूर्णांक 118, 2013, पृ. 180

10) चौहान, सूरजपाल, बदबू, हमारा हिस्सा, सं. अरुण प्रकाश, पेंगुइन बुक्स इंडिया, यात्रा बुक्स, प्रथम संस्करण 2005, पृ.205

11) मुनीन्द्र, सुषमा, मेरी बिटिया, श्री प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1997, पृ. 9

12) शफक, सीमा, शिकस्त, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2004, पृ. 53

13) खेतान, प्रभा, भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र, सामयिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2007, पृ. 235